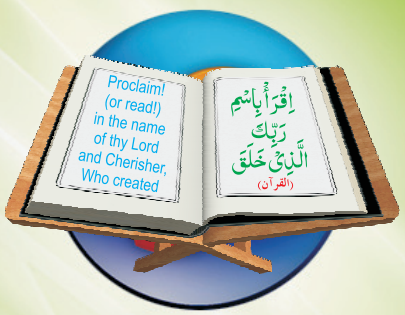

अज़मत-ए-कुरआन

Compiler

मुफ्ती मुहम्मद फारूक़ साहब

जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

Publisher:

मकतबा महमूदिया

जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

किसी भी तरह की छपाई, डिज़ाईनिंग और प्रिन्टिंग के लिए संपर्क करें।
जैसे: किताबें, कैलेन्डर, पोस्टर, रसीद बुक, रजिस्टर, सनद, मोहर आदि
नुर्जीबुर्रहमान क़ासमी (नुस्कान प्रेस सुभाष नगर, मेरठ) 7895786325

अज़मत-ए-कुरआन

अज़
मो0 फ़ारूक़ गुफ़िरा लहू
ख़ादिम जामिया महमूदिया, अलीपुर, मेरठ

प्रकाशकः
मकतबा महमूदिया
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ। 245206

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

तफ़सीलात

नाम किताब	:	**अज़मत-ए-कुरआन**
लेखक	:	**मो० फ़ारूक़** गुफिरा लहू खादिम जामिया महमूदिया, मेरठ
तादाद	:	5000
कम्पोज़िग	:	मुजीबुर्रहमान क़ासमी शोबा कम्प्यूटर जामिया हाज़ा
सन् प्रकाशन	:	1433 हि०, 2012 ई०
पेज	:	??
क़ीमत	:	??

मिलने का पताः

मकतबा महमूदिया

जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ। 245206

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

फ़हरिस्त

☆ अज़मत-ए-कुरआन
☆ तफ़सीर की ज़रूरत व अहमियत
☆ कुरआन पाक का तआ़रुफ़
☆ हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम
☆ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम का हज़रत जिबरईल अल० को देखना
☆ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की चौदह सालह ज़िन्दगी
☆ ख़िलवत गज़ीनी
☆ वह़ी की इब्तदा
☆ अंबिया अलयहिमुस्सलाम के साथ मआ़मला
☆ वह़ी का इन्क़ताअ
☆ कैफ़ियत वही
☆ एक सह़ाबी का तास्सुर
☆ अज़मत-ए-कुरआन

- ☆ इन्सान के तहम्मुल की वजह
- ☆ हिफ़ाज़त-ए-कुरआन
- ☆ जिन्नात व श्यातीन के दखूल पर पाबन्दी
- ☆ जिन्नाती और श्यातीनी बातों से लोगों का गुमराह होना
- ☆ जिन्नात का इन्तमाअ़
- ☆ हिफ़ाज़त-ए-कुरआन का ग़ैबी इन्तज़ाम
- ☆ अंग्रेज़ की नापाक साज़िश
- ☆ हिफ़ाज़त का ग़ैबी इन्तज़ाम
- ☆ कुरआन थोड़ा-थोड़ा नाज़िल होने की हिकमत
- ☆ नजूल कुरआन के वक़्त मुशक़्क़त
- ☆ नजूल कुरआन की हिकमत
- ☆ नुस्खा-ए-शिफ़ा
- ☆ बन्दूक़ की मिसाल
- ☆ क़ौमों का उरूज व ज़वाल
- ☆ कुरआन पाक से अग़राज़
- ☆ सबसे अफ़ज़ल इन्सान
- ☆ तिलावत-ए-कुरआन की फ़ज़ीलत
- ☆ कुरआन से खाली सीना
- ☆ कुल हुवल्लाहु अह़द और बाज़ सूरतों की फ़ज़ीलत
- ☆ तिलावत-ए-कुरआन की मिसाल

- ☆ कुरआन शरीफ़ क़यामत में झगड़ेगा
- ☆ करामत का ताज
- ☆ हर हुरुफ़ पर दस नेकी
- ☆ हाफ़िज़ के वालिदैन को ताज पहनाया जायेगा
- ☆ हाफ़िज़ को ताज पहनाया जायेगा
- ☆ कुरआन पाक को नाज़िरा और हिफ़्ज करने की फ़ज़ीलत
- ☆ कुरआन पढ़ने वाले का एजाज़ क़यामत में
- ☆ कुरआन पाक की शिफ़ाअत मक़बूल है
- ☆ कुरआन शरीफ़ से बढ़कर किसी की सिफ़ारिश नहीं
- ☆ कुरआन शरीफ के ज़रिये अल्लाह तआ़ला का कुर्ब
- ☆ इमाम अहमद इब्ने हंबल का ख़्वाब
- ☆ अहल-उल-कुरआन अहलुल्लाह हैं
- ☆ कुरआन शरीफ़ का हसीन व जमील सूरत में आना

तम्मत व बिल फज़्ल अम्मत

❁❁❁

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिररहीम

अज़मत-ए-कुरआन

यह एक वअ़ज़ है जो कुरआन पाक की तफ़सीर शुरू करने के मौक़े पर किया गया जिसमें कुरआन पाक की अ़ज़मत और तफ़सीर कुरआन पाक की ज़रूरत व अहमियत को बयान किया गया है। बाज़ अह़ादीस मुबारका का इज़ाफ़ा बाद में किया गया है।

तफ़्सीर की ज़रूरत व अहमियत

اَلْحَمْدُللهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلاَ هَادِىَ لَه وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لاَشَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَمَوْلاَنَا وَحَبِيْبَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُه. اَمَّا بَعْدُ!

अल्हम्दु लिल्लाहि नहमदुहू व नसतईनुहू व नस्तग़फ़िरुहू व नुअमिनु बिही व नतवक्कलु अलयहि व नऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अनफ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअमालिना मन्य यहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ल लह। व मन्य युज़लिलहु फ़ला हादिया लह। व नशहदु अंल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लह। व नशहदु अन्ना सय्यिदना व मौलाना व हबीबिना मुहम्मदिन अब्दुहू व रसूलुहू।

अम्मा बाअद!

फ़ऊज़ू बिल्लाहि मिनश शयतानिर्रजीम।
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

इन्नहू लक़ौलु रसूलिन करीम। ज़ी क़ुव्वतिन इन्दा ज़िल अरशिल मकीनि मुताइन सम्म अमीन।

सूरः तकवीरः **20 / 19**

मुअज़्ज़िज़ सामईन किराम! कुरआन पाक की अ़ज़मत के लिए यही काफी है कि कुरआन पाक अल्लाह तआला का कलाम है। अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में खुद

कुरआन पाक का तआरुफ़ कराया है।

कुरआन पाक का तआ़रूफ़

इन्नहू लकुरआनुन करीमु। फी किताबिन मकनूना। ला यमुस्सहू इल्लल मुतहहरूना।

तर्जुमाः यकीनन यह बड़ा बावक़ार कुरआन है जो एक महफूज किताब में (पहले से) दर्ज है। इसको वही लोग छूते हैं जो खूब पाक हैं।

कुरआन पाक को किसने उतारा? किसने नाजिल किया? उसको भी बयान फरमाया है:

तनजीलुम मिर रब्बिल आलमीन।

तर्जुमाः यह तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ से थोड़ा-थोड़ा करके उतारा जा रहा है।

कुरआन पाक को नाजिल करने के साथ-साथ उसकी हिफ़ाजत के बारे में भी इरशाद फरमायाः

इन्ना नहनु नज्जलनज़् ज़िक्रा व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून।

तर्जुमाः और हकीकत है कि यह ज़िक्र (कुरआन) हमने ही उतारा है और हम ही उसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।

कुरआन पाक किस महीने में उतारा उसको भी अल्लाह तआला ने बयान फरमाया है-

शहरु रमजानल्लज़ी उन्ज़िला फीहिल कुरआनु हुदल लिन्नासि व बय्यिनातिम मिनल हुदा वल फुरक़ान।

तर्जुमाः रमजान का महीना वह है जिसमें

कुरआन नाजिल किया गया जो सरापा हिदायत और ऐसी रोशन निशानियों का हामिल है जो सही दास्ता दिखाती और हक व बातिल के दरमियान दो टूक फैसला कर देती है।

किस रात में उतारा उसको भी बयान फरमाया-

इन्ना अन्ज़लनाहु फी लयलतिल कद्र वमा अदराकअ मा लयलतुल कद्र, लयलतुल कद्रि खयरुम मिन अलफि शहर।

तर्जुमाः बेशक! हमने इस (कुरआन) को शब कद्र में नाजिल किया है और तुम्हें क्या मालूम शब कद्र क्या चीज है, शब कद्र एक हजार महीनों से भी बेहतर है।

इन्ना अन्जलनाहु फी लयलतिम मुबारकतिन।

तर्जुमाः हमने इसे एक मुबारक रात में उतारा है।

खुद कुरआन पाक के मज़ामीन के बारे में इरशाद फरमायाः

व नुनज़्ज़िलु मिनल कुरआनअ मा हुवअ शिफाउंव व रहमतुल लिलमूमिनीन।

तर्जुमाः और हम वह कुरआन नाज़िल कर रहे हैं जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत का सामान है।

कुरआन पाक की अजमत को बयान फरमायाः

व लकद आतयनाका सबअम मिनल मसानी वल कुरआनल अज़ीम।

तर्जुमाः और हमने तुम्हें सात ऐसी आयतें दे रखी हैं जो बार-बार पढ़ी जाती हैं और अजमत वाला कुरआन अता किया है।

ला तमुद्दनअ अयनयकअ इला मा मत्तअना बिही अजवाजम मिनहुम।

तर्जुमाः और तुम इन चीजों की तरफ आँख उठाकर भी न देखो जो हमने इन (काफिरों) में से मुख़्तलिफ लोगों को मज़े उड़ाने के लिए दे रखी है।

व नज़्ज़लना अलयकल किताबा तबीनल लिकुल्लि शयइंव व हुदंव व रहमतंव व बुशरा लिलआलमीन।

तर्जुमाः और हमने तुम पर यह किताब उतारी है ताकि वह हर बात खोल-खोल कर बयान करदे और मुसलमानों के लिए हिदायत, रहमत और खुश खबरी का सामान हो।

इस तरह यह कुरआन पाक किस अजीमुश शान अजीमुल मरतबत फरिश्ते के जरिये नाजिल किया गया और किस अजीमुल मरतबत ज़ात आली पैगम्बर पर नाजिल किया गया, अल्लाह तआला ने इसको भी तफसील से बयान फरमाया है-

इरशाद बारी तआला है-

इन्नहू लकौलु रसूलिन करीम। ज़ी कुव्वतिन इन्दा ज़िल अरशिल मकीन। मुताइन सम्म अमीन। वमा साहिबुकुम बिमजनून। व लकद रआहु बिल उफुकिल मुबीन। वमा हुवा अलल ग़यबि बि ज़नीन। वमा हुवा बिकौलि शयतानिर रजीम। फ अयना तज़हबून। इन हुवा इल्ला ज़िकुरुल लिल आ-लमीन। लिमन शाआ मिनकुम अंय यसतकीम। वमा तशाऊना इल्ला अंय यशाअल्लाहु

रब्बुल आ-लमीन।

तर्जुमाः यह (कुरआन) यकीनी तौर पर एक मुअज़्ज़िज़ फरिश्ते का लाया हुआ कलाम है जो कुव्वत वाला है, जिसका अर्श वाले के पास बड़ा मरतबा है, वहाँ उसकी बात मानी जाती है, वह अमानतदार है और (ऐ मक्का वालों!) तुम्हारे साथ रहने वाले यह साहब (यानी हज़रत मुहम्मद सल्ल०) कोई दीवाने नहीं हैं, और यह बिलकुल सच्ची बात है कि उन्होंने इस फरिश्ते को खुले हुए उफक़ पर देखा है और वह गैब की बातों के बारे में बखील भी नहीं हैं। और न यह (कुरआन) किसी मरदूद शैतान की बनाई हुई कोई बात है। फिर भी तुम लोग किधर चले जा रहे हो यह तो दुनिया जहान के लोगों के लिए एक नसीहत है। तुम में से हर उस शख्स के लिए जो सीधा सीधा रहना चाहे और तुम चाहोगे नहीं इल्ला यह कि खुद अल्लाह चाहे जो सारे जहानों का परवरदिगार है।

हजरत जिबराई अलयहिस्सलाम

इन्नहू लकवलु रसूलिन करीम।

इस आयत पाक में कुरआन पाक के तआरुफ़ के मुतअल्लिक़ ही अल्लाह तआला इरशाद फरमा रहे हैं। यह कुरआन पाक एक मुअज्जिज फरिश्ते का लाया हुआ कलाम है यानी उसको लाने वाला फरिश्ता जो अल्लाह तआला के और हरजर नबी अकरम सल्ल० के दरमियान में कासिद और वास्ता है, वह इन्तहाई मुअज्जिज और बहुत ज्यादा

काबिल ताअजीम फरिश्ता है जिसको अल्लाह तआला मुकर्रम फरमा रहे हैं कि वह बहुत ज्यादा काबिल ताअजीम और बहुत ज्यादा काबिल इकराम है, जाहिर है कि इस फरिश्ते का क्या मुक़ाम होगा और वह रसूल करीम मुअज्जिज फरिश्ता काबिल ताअजीम होने के साथ-साथ ''जी क़ुव्वातिन'' बहुत बड़ी कुव्वत वाला फरिशता है। (हजरत जिबराई अलयहिस्सलाम) इसका यह मतलब हरगिज नहीं कि वह बहुत बड़ा करीम और बहुत ज्यादा शरीफ और बाइज्जत है तो उसकी शराफत से कोई गलत फाइदा उठाकर कोई जिन या शैयतान दरमियान में दखल अन्दाजी कर दे ऐसा हरगिज नहीं इसलिए कि ''जी क़ुव्वातिन'' काबिल ताअजीम व तकरीम होने के साथ-साथ बहुत बड़ी कुव्वत वाला फरिशता है जिसकी वजह से किसी को दखल अन्दाजी करने का कोई मौका नहीं।

"وقد اخرج البخاری، عن ابن مسعود فی قوله تعالیٰ "لَقَدْ رَاٰی مِنْ آیٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰی" رأی جبرئیل له ستمائة جناح، والترمذی من مسروق عن عائشة ان رسول الله صلی الله علیه وسلم لم یر جبرئیل فی صورته الا مَرَّتین عند سدرة المنتهی ومرة فی جیاد له ستمائة جناح قد سد الافق. (روح المعانی: ۱۲/۲۴۱، بخاری:۱/۴۵۸)

''व कद अखरजल बुखारी अन इब्ने मसऊद फी कवलिही तआला (लकद रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुबरा) रआ जिबरीलअ लहू सतमाइतअ जिनाहअ वत्तरमिज़ी मिन मसरूक अन आइशअति अन रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमअ लम यर

जिबरीलअ फी सूरतिन इल्ला मर्रअ तयनि इन्दअ सिदरतिल मुन्तहा वमरतअ फी जियादि लहू सतमाइतअ जिनाहअ क़द सदल उफुक़।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रजि० आयते मुबारकह *''लक़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुबरा''* (सच तो यह है कि उन्होंने अपने परवरदिगार की बड़ी-बड़ी निशानियों में से बहुत कुछ देखा) के बारे में इरशाद फरमता हैं कि इससे मुराद यह है कि आनहज़रत सल्ल० ने हजरत जिबरील अलयहिस्ससलाम को देखा है कि उनके छः सौ बाजू हैं और हजरत आइशा सिद्दीकह रजि० फरमाती हैं कि हजरत नबी अकरम सल्ल० ने हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम को उनकी अपनी असली सूरत में सिर्फ दो मरतबा देखा है एक मरतबा सिदरतुल मुन्तहा पर और एक मरतबा जियाद में कि उनके छः सौ बाजू हैं और उन्होंने पूरे उफ़क को भर रखा है।

हजरत जिबराई अलयहिस्सलाम के बारें में हदीस में आया है कि उनके छः सौ बाजू हैं और एक बाजू के अन्दर इतनी कुव्वत है कि अगर जमीनों के नीचे उसको रखकर जरा सी हरकत दें तो जमीनों को उठाकर पठख दें। चुनाँचि कौम लूत, आद व कौम समूद वगैरह को जो हिलाक किया गया हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम को हुक्म दिया गया और उन्होंने अपना पर जमीन पर मारा और उन जमीनों को उठाया और आसमान के करीब ले गये यहाँ तक कि आसमान वाले जमीन वालों की आवाजें सुनने लगे और

फिर उनको उल्टा करके पटख दिया जिससे वह सब हिलाक हो गये। (रूहुल मआनी **104 / 16,** हाशिया अलसावीः **280 / 4**)

इतनी बड़ी कुव्वत वाला फरिशता है हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम इसलिए किसी को दखल अन्दाजी करने का कोई मौका नहीं हैं कि कोई जिन या शैयतान इसमें दखल अन्दाजी कर सके।

फिर उसका मुक़ाम कितना ऊँचा है, आगे उसको बयान फरमाया है-

''*इन्दअज़िल अरशि मकीन।*''

(अर्श वाले के पास इसका ठिकाना है) यानी अल्लाह तआला के करीब उनका ठिकाना है, इतना ऊँचा मकाम है और इस मक़ाम के साथ-साथ वह 'मुताअ' है मुताअ कहते हैं जिसकी फरमाँबरदारी की जाये, फरिश्ते उनकी इताअत और फरमाँबरदारी करते हैं और इताअत की जाती है सरदार की। मतलब यह हुआ कि वह तमाम फरिशतों के सरदार हैं अफजलुल मलाइकअ में अफ़जल हैं।

और जब वह तमात फरिशतों के सरदार हैं तो इस पर यह शुबा हो सकता है कि वह अपनी तरफ से कुरआन करीम में कोई कमी या ज्यादती कर सकते हैं, उन्हें कौन टोकने वाला है।

इरशाद फरमायाः

''*सुम्मअ अमीन*''

फिर वह अमीन भी हैं अमानतदार भी हैं।

अमीन होने की वजह से वह अपनी तरफ से तसर्रुफ नहीं कर सकते जो अमीन होता है वह अपनी तरफ

से कमी या जियादती नहीं कर सकता, अगर अपनी तरफ से कमी या ज्यादती करदी तो फिर वह अमीन कहां होगा। इसलिए हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम अपनी तरफ से कमी या ज्यादती नहीं कर सकते।

बहरहाल वह तो अमीन है, लेकिन जब वह हजरत नबी अकरम सल्ल० के पास लेकर आये और हजरत नबी अकरम सल्ल० के पास पूरा पूरा कुरआन पाक पहुँचा दिया हो सकता है कि हजरत नबी अकरम सल्ल० ने उसको महफूज न किया हो कुछ रह गया हो , इस शुबे के इजाले के लिए फरमायाः

''*वमा साहिबुकुम बिमजनून।*''

और तुम्हारे जो साहब हैं हजरत नबी अकरम सल्ल० वह मजनून नहीं हैं कि उसको महफूज न कर सकें और याद न कर सकें और उसके अन्दर कोई कमी वाकअ हो जाए, उसका कोई इमकान ही नहीं ।

पस हज़रत नबी अकरम सल्ल० भी सादिक और अमीन।

और जिबरील अलयहिस्सलाम भी अमीन।

और भेजने वाला भी अमीन और अमीन होने के साथ साथ रब्बुल आलअमीन।

लिहाज़ा दखल अन्दाजी की भी कोई शक्ल नहीं, याद न रहने और महफूज न रहने की भी कोई वजह नहीं।

आनहज़रत स० का हज़रत जिबरील अलै० को देखना

लेकिन सवाल होता है कि क्या हज़रत नबी अकरम

सल्ल० ने हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम को देखा है कि उनको वह पहचान लें कि यह हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम हैं। ऐसा तो नहीं कि हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम के नाम पर कोई और जिन वगैरह दरमियान में आ जाये और वह वही के नाम पर कोई चीज़ पहुँचा दे और हज़रत नबी अकरम सल्ल० उसको वही समझ लें इस शुबे को दूर करने के लिए अल्लाह तआला फरमा रहे हैं:

''व लकद रआहु बिल उफुक़िल मुबीन''

उन्होंने देखा भी है असली सूरत में भी जिबरील अलयहिस्सलाम को उफक मुबीन पर देखा, आसमानों पर देशा कि पूरे आसमान के किनारों को उन्होंने घेर रखा है।

हज़रत नबी-ए-अकरम सल्ल० फरमाते हैं कि जब पहले वह़ी का सिलसिला शुरु हुआ और दरमियान में कुछ सिलसिला मुनकतअ हो गया तो एक मरतबा मैं चला जा रहा था मुझे आवाज आई, मैंने दाएँ तरफ देखा, बाईं तरफ देखा, आगे देखा, पीछे देखा कुछ भी नज़र नहीं आया। ऊपर देखा तो वही फरिश्ता जो ग़ारे हिरा में मेरे पास आया था हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम को देखा कि जमीन और आसमान के दरमियान एक कुरसी पर बैठा है अपनी असली सूरत में और उसने पूरे आसमान के किनारों को घेर रखा है।

मालूम हुआ कि उनको देखा भी है।

पस यह शुबा भी खत्म हो गया कि हज़रत जिबरील

अलैहि० के नाम से कोई और जिन्न वगैरह आ जाता हो और वही के नाम पर कोई और चीज पहुँचा देता हो।

अलबत्ता यह शुबा बाकी रह जाता है कि हज़रत नबी अकरम सल्ल० ने वही में से कोई चीज उम्मत को न पहुँचाई हो और कुरआन करीम में से पहुँचाने से कोई चीज रह गयी हो इस शुबे को दूर करने के लिए इरशाद फरमायाः

''वमा हुवअ अलल ग़यबि बिज़अनीन''

हज़रत नबी-ए-अकरम सल्ल० कोई बखील नहीं हैं कि आपके पास अल्लाह तआला की तरफ से कोई हुक्म आए और आप उसको छिपा लेवें। किसी आदमी ने कोई चीज तकसीम करने के लिए दी और वह उसको छिपा लेवें यह तो बखील का काम है।

जब मालूम हो गया कि वही भेजने वाला खुद हक तआला शानहू है जो रब्बुल आलअमीन है और लाने वाले हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम हैं जो इतनी बड़ी कुव्वत के मालिक हैं और अमीन भी है और तुम्हारे साहब यानी हज़रत नबी अकरम सल्ल० भी सादिक और अमीन हैं, कोई दीवाने या मजनूँ नहीं हैं और बखील भी नहीं हैं तो मालूम हो गया कि यह कुरआन अल्लाह तआ़ला का कलाम है और जिसे तरह नाज़िल हुआ था हज़रत नबी अकरम सल्ल० ने उसको उसी तरह जूँ का तूँ उम्मत के हवाले फरमा दिया और वह आज भी इसी तरह जूँ को तूँ बिल्कुल महफूज है।

और ''*वमा हुवअ बिक़ौलि शयतानिर रजीम*''

यह किसी शैयतान मरदूद का कलाम नहीं है। शैयतान मरदूर को किसी किस्म की वसीसा कारी की, किसी किस्म की कोई गुंजाइश भी नहीं।

आगे इरशाद खुदा वन्दी है:

''*फअयना तज़हबून*''

कहाँ जा रहे हो? यह मालूम होने के बाद कि यह कलाम रब्बानी है, इसमें कोई शक व शुबा नहीं फिर उसको छोड़कर उसकी तरफ क्यों मुतवज्जा नहीं होते, इससे क्यों नसीहत हासिल नहीं करते।

''*इन हुवअ ज़िकुरुल लिल आलअमीन*''

यह तो दुनिया जहान वालों के लिए एक नसीहत है, अल्लाह तआला ने नसीहत के तौर पर उसको उतारा है।

लेकिन ''*लिमन शाअ मिनकुम अंय यसतक़ीम*''

जो सीधे रास्ते पर चलना चाहे उसी के लिए हिदायत है, उसी के लिए नसीहत है। जो शख्स सीधे रास्ते पर चलना ही न चाहता हो उसको इससे कोई फायदा नही होता।

''*वमा तशाऊनअ इल्ला अंय यशाअल्लाहु रब्बुल आलअमीन*''

मगर बात यह है कि तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह तआला ही चाहे जो रब्बुल आलअमीन है, अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है, अपने चाहने से कुछ नहीं होता।

इन आयात मुबारका में कुरआने पाक का तआरुफ कराय गया कि कुरआने पाक क्या है? किसका कलाम है? कौन लेकर आया? किस तरह आया? किस पर नाजिल हुआ? खुद हज़रत नबी अकरम सल्ल० का भी तआरुफ कराया गया।

आँहज़रत स० की चालीस साला जिन्दगी

हजरत नबी-ए-अकरम सल्ल० अरब की सरज़मीन मक्का मुकर्रमा के रहने वाले, वहाँ आप की पैदाइश हुई। अरब का जुग़राफ़िया जानने जानते हैं कि वहाँ उस वक्त किसी किस्म का कोई तमद्दुन नहीं था और किसी किस्म की कोई तरक़्की की चीजें वहां नहीं थीं। अरब के अन्दर कोई दीनी तालीमगाह नहीं थी, कोई यूनिवर्सिटी नहीं थी। ऐसा पसमान्दा इलाका कि कोई वहां हकूमत भी नहीं कर सकता था, किसी का कानून वहां नहीं चलता था। ऐसी जगह में हजरत नबी अकरम सल्ल० की पैदाईश हुई और चालीस बरस का ज़माना लोगों के सामने आपका गुजरा। इस पूरी मुद्दत में किसी उस्ताज़ के सामने पढ़ने के लिए नहीं गए। कहीं बाहर मुल्क का सफर पढ़ने के लिए नहीं किया। आप सल्ल० पूरी जिन्दगी वहीं रहे, इब्तदा जवानी में चन्द दिन का सफर मुल्क शाम का अपने चचा के साथ किया और फौरन वापस आ गए। इसी तरह हज़रत खदीजतुल कुबरा रजि० तआला अनहा के गुलाम के साथ हज़रत खदीजा रजि० का सामान तिजारत लेकर चन्द दिन

का सफर फरमाया, वह तो अलग रहे, लेकिन आप सल्ल० इल्म हासिल करने के लिए कहीं गए हों, ऐसा नहीं । इब्तदाई चालीस साल का जमाना लागों के सामने मक्का मुकर्रमा में गुजरा, कहीं एक दिन के लिए भी आप सल्ल० पढ़ने के लिए नहीं गए और यह पूरा जमाना इस तरह गुजरा कि इस पूरी मुद्दत में आपने कभी झूठ नहीं बोला, कभी कोई ख़्यानत नहीं की, कभी कोई ऐसी हरकत नहीं की कि इन्सानियत या शराफत से गिरी हुई मालूम हो, इसी लिए अरब के लाग आपको सादिक़ और अमीन कहते थे। लोग अपने फैसले आकर हजरत नबी अकरम सल्ल० से कराते थे, अपनी अमानतें हजरत नबी अकरम सल्ल० के पास रखते थे।

ख़िलवत गज़ीनी

अखीर में तन्हाई और खिलवत गज़ीनी का शौक आप सल्ल० के ऊपर गालिब हुआ, वहीं मक्का मुकर्रमा में आबादी से बाहर ढाई तीन मील के फासले पर एक गार जिको गार हिरा कहते हैं, आप सल्ल० इबादत करने के लिए सब लागों से कटकर वहां चले जाते, कई-कई दिन वहाँ रहते, कुछ नाश्ता वगैरह खाने का सामान अपने हमराह ले जाते जब तोशा खत्म हो जाता घर आकर फिर तोशा लेकर चले जाते या उम्मुल मोमिनीन हजरत खदीजतुल कुबरा रजि० पहुँचा देतीं और आनहजरत सल्ल० बराबर याद खुदा वन्दी में मशगूल रहते और बाज़ दफा एक एक

महीने घर नहीं जाते थे।

वही की इब्तदा

एक अरसा इसी तरह गुजरा, एक अरसा गुजरने के बाद एक दिन आप सल्ल० गार हिरा में मौजूद थे। सय्यदना जिबराई अलयहिस्सलाम तशरीफ लाए और हजरत नबी करीम सल्ल० से फरमाया कि पढ़िये- ''***इक़रा***''

आप सल्ल० ने फरमायः ''***मा अना बिकारीयिन***'' मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।

जिबरील अलयहिस्सलाम ने आँहजरत सल्ल० को सीने से सीना मिलाकर जोर से भींचा और फिर फरमाया- ''***इक़रा***'' पढ़िये। आप सल्ल० ने फिर भी यही फरमाया- ''***मा अना बिकारीयिन***'' मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। फिर दूसरी मरतबा दबोचा और फरमाया कि ''***इक़रा***'' पढ़िये। आनहजरत सल्ल० ने फिर भी यही जवाब दिया- ''***मा अना बिकारीयिन***'' मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। जिबरील अलै० ने तीसरी मरतबा दबोचा और फिर फरमाया- ''***इक़रा***'' और सूरः अलक़ की इब्तदाई पाँच आयतें पढ़ीं।

''*इक़रअ बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़। ख़लक़ल इन्साना मिन अलक़। इक़रअ वरब्बुकल अकरम। अल्लज़ी अ़ल्लमा बिल क़लम। अ़ल्लमल इन्साना मालम यालम।*''

तर्जुमाः पढ़ो अपने परवर दिगार का नाम लेकर जिसने सब कुछ पैदा किया है, उसने इन्सानों को जमे हुए

खून से पैदा किया है, पढ़ो और तुम्हारा परवर दिगार सबसे ज़्यादा करम वाला है, जिसने कलम से तालीम दी इन्सान को उस चीज की तालीम दी जो वह नहीं जानता था। (आसान तरजुमा)

यहाँ तक कि यह आयतें हज़रत जिबरील अलयहिस्सलाम ने सुनाईं और यह आयतें सुनाकर हज़रत जिबरील अलयहिस्सलाम वापिस तशरीफ ले गए। हज़रत नबी अकरम सल्ल० वहाँ से सीधे मकान तशरीफ लाए और खदीजतुल कुबरा रजि० से पूरा वाकिआ जिक्र किया कि आज ऐसा हुआ है और मुझे तो अपनी जान का खतरा हो रहा है। इतनी बड़ी अमानत औइ इतना बड़ा बोझ मैं उठा सकूँगा या नहीं। हजरत खदीजतुल कुबरा रजि० ने तसल्ली दी कि आप हरगिज हरगिज़ घबराएं नहीं। अल्लाह तआला आप को ज़ाया नहीं करेंगे। आप सल्ल० के जो अख़लाक हैं आप गरीबों के काम आते हैं, बेवाओं के काम आते हैं, महमानों की महमान नवाज़ी करते हैं, सिला रहमी करते हैं, बूढ़ों का अहतराम करते हैं, ऐसे अखलाक़ और सिफ़ात वाले आदमी को अल्लाह तआला ज़ाया नहीं करता। पहले तो खदीजतुल कुबरा रजि० ने खुद तसल्ली दी और फिर आप सल्ल० को लेकर वरक़ा बिन नोफिल जो उनका चचाज़ाद भाई था उनके पास लेकर गईं जो आसमानी किताबों के माहिर थे और दूसरी ज़बानों में उनका तरजुमा किया करते थे। उनसे जाकर कहा कि अपने भतीजे की बातें सुनिए, यह किया बयान करते हैं। हज़रत नबी अकरम

सल्ल० ने पूरा वाकिआ़ बयान फरमाया तो वरक़ा बिन नोफिल ने कहा कि यह तो वही फरिशता है जो हज़रत मूसा अलयहिस्सलाम के पास वही लेकर आया करता था। उनको यक़ीन हो गया कि यह तो अल्लाह तआ़ला के नबी हैं, यह फरिशता हज़रत नबी अकरम सल्ल० के पास वही लेकर आया है इसलिए कहा कि काश मैं उस दिन जिन्दा होता जिस दिन आप सल्ल० की कौम आप सल्ल० को निकालेगी। हज़रत नबी अकरम सल्ल० को बड़ा तअज्जुब हुआ और फरमाया कि क्या वह मुझे निकालने वाले हैंज जो लोग मेरी इज्जत करते हैं, अहतराम करते हैं, मुझको सादिक़ और अमीन कहते हैं। क्या वह मुझे निकालेंगे मक्का से? वरक़ा बिन नोफिल ने कहा कि हाँ वह तुमको निकालेंगे। इसलिए कि कभी कोई आदमी वह चीज लेकर नहीं आया जो आप लेकर आए हैं। मगर उनकी कौम ने उनके साथ वही सलूक किया।

अंबिया अलयहिमुस्सलाम के साथ मुआमला

पहले अंबिया अलयहिमुस्सलाम भी जब अल्लाह की तरफ से वही लेकर आए हैं तो उनकी क़ौम ने उनके साथ यही मआमला किया है। इसलिए आपके साथ भी यही मआ़मला किया जायेगा और काश! मैं उस वक्त ज़िन्दा होता चूँकि उस वक्त वह अपनी अखीर उम्र में थे, इसलिए इत्मीनान नहीं था कि मैं उस वक्त तक जिन्दा रहूँगा। इसलिए तमन्ना जाहिर की कि काश! मैं उस वक्त जिन्दा

होता जब आपकी कौम आपके साथ यह सलूक करेगी तो मैं आपकी भरपूर मदद करता। गर्ज़कि इस तरह यह वही का सिलसिला शुरू हुआ।

वही का इन्क़िताअ

शुरू में वही नाज़िल होने के बाद ढाई तीन बरस तक वही का सिलसिला मुनकतअ रहा। इस मुद्दत में वही नाजिल नहीं हुई। जिसकी वजह से हज़रत नबी अकरम सल्ल० को बहुत ज्यादा रंज और गम था। यहाँ तक कि फिर ढाई तीन बरस के बाद दोबारा वही का सिलसिला शुरू हुआ कि आप चले जा रहे थे। रास्ते में देखा कि आपको आवाज आई। आप सल्ल० ने दाएँ देखा, बाँई जानिब देखा, आगे देखा, पीछे देखा। कोइ नजर नहीं आया। ऊपर देखा तो आपने हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम जो गार हिरा में तशरीफ लाए थे उनको वहाँ आसमान व जमीन के दरमियान कुरसी पर बैठा हुआ देखा। फिर आप को घबराहट हुई। घर तशरीफ लाए और आकर अपनी ज़ोजा मुतह्हिरा खदीजतुल कुबरा रजि० से फरमाया कि ''*ज़म्मिलूनी ज़म्मिलूनी*'' (मुझे कपड़ा उढ़ाओ , मुझे कपड़ा उढ़ाओ।) मुझे ज़रा कुछ सर्दी महसूस हो रही है और कुछ घबराहट महसूस हो रही है। चनाँचि आप सल्ल० को कपड़ा उढ़ाया इसी हालत में वही नाज़िल हुई और फिर वही का सिलसिला शुरू हुआ और यह आयतें नाज़िल हुईं-

''*या अय्युहल मुद्दस्सिर। कुम फअन्ज़िर। व*

रब्बका फकब्बिर। व सियाबका फ़तह्हिर।''

तर्जुमाः ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले! ऐ कम्बल पोश! खड़े हो जाओ। अब बैठने का ज़माना नहीं रहा, अपनी कौम को डराइये, अपने रब की बड़ाई और अज़मत बयान कीजिए और अपने कपड़ों को साफ सुथरा रखिए।

आगे तक यह आयतें नाजिल हुईं।

जब सय्यदना हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम वही लेकर आए तो हज़रत नबी अकरम सल्ल० भी साथ-साथ पढ़ना चाहते थे कि कहीं भूल न जाऊँ और अपने होंठों को साथ-साथ पढ़ने के लिए हरकत देते थे, अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फरमाया-

''ला तुहर्रिक् बिही लिसानका''

अपनी ज़बान को हरकत मत दीजिए। यह फिक्र मत कीजिए कि यह आपको याद नहीं होगा क्यों

''इन्नअ अलयना बयानहु''

जब जिबरील अलयहिस्सलाम आपके सामने वही को लाकर सुना दिया करें।

''फत्तबिअ क़ुरआनहु''

उनके पढ़ने के बाद पढ़ा कीजिए और आप उसका फिक्र मत कीजिए कि आपको याद नहीं रहेगा यह याद कराना तो हमारे जिम्मे है और दिल में बिठा देना भी हमारे जिम्मे है।

''सुम्मअ अलयना बयानह''

और इसका बयान करना और समझा देना भी हमारे

जिम्मे है। अल्लाह तआला ने समझाने की भी जिम्मेदारी ली, याद कराने की भी जिम्मेदारी ली, चुनान्चे इसके बाद से हजरत नबी अकरम सल्ल० सय्यदना जिबरील अलयहिस्सलाम के पढ़ने के बाद पढ़ते थे और वह पूरा कुरआन पाक आपके सीना मुबारक में महफूज हो जाता था और उसके मआना भी। अल्लाह तआला आप सल्ल० के दिल में डाल देते थे।

कैफ़ियत-ए-वही

जब वही नाज़िल होती तो उसका इतना बोझ आप सल्ल० के ऊपर होता था कि पेशानी मुबारक के ऊपर पसीना आ जाता था सख्त ठण्ड पड़ रही है, सर्दी की शिद्दत है और ऐसी हालत में जब वही नाजिल होती तो इतना बोझ आप सल्ल० के ऊपर होता था इस वही का कि आपके चेहरे मुबारक से पसीना इस तरह टपकता था जैसे मोती होते हैं। (बुखारी शरीफः 2/1)

एक सहाबी का तअस्सुर

एक सहाबी हैं हजरत जैद बिन साबित रजि० वह फरमाते हैं कि आनहजरत सल्ल० की रान मुबारक उनकी रान पर रखी हुई थी। वह फरमाते हैं इसी हालत में वही नाजिल होना शुरू हो गई तो इतना बोझ मेरी रान पर पड़ा कि मुझे अन्देशा हुआ कि मेरी रान टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी, रीजा-रीजा हो जाएगी। अन्दाजा लगाइये कि आप सल्ल० के

ऊपर कितना बोझ होता होगा और किस तरह हजरत नबी अकरम सल्ल० उसका तहम्मुल फरमाते होंगे। बहरे हाल इसका बोझ क्यों नहीं होगा कुरआन पाक कोई मामूली चीज नहीं यह तो अल्लाह का कलाम है। यह तो अल्लाह तआला ने इन्सानों के वास्ते आसान फरमा दिया वरना उसकी बड़ाई उसकी अज़मत उसके जलाल का तो यह आलम है इरशाद बारी तआ़ला है।

अज़मत-ए-कुरआन

''*लव अन्ज़लना हाज़ल कुरआना अला जबलिल लरअयतहू खाशिअम मुतअस्दि्दअम मिन खशयतिल्लाह।*'' (*सूरह अलहश्रः* 21)

तर्जुमाः अगर हम इस कुरआन पाक को पहाड़ों पर उतार देते तो आप देखते कि पहाड़ लरज़ जाता, फट जाता, रीज़ा रीज़ा हो जाता, अल्लाह के खौफ की वजह से। (जामिउल बयान **53/14**)

और एक जगह अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं-

''*इन्ना अरजनल अमानतअ अलस समावाति वल अरजि़ वल जिबालि फाबयनअ अंय यहमिलनहा व अश फ़क्नअ मिनहा व हमअलअहल इन्सान।*''

तर्जुमाः हमने अपनी यह अमानत आसमानों पर पेश की, जमीनों पर पेश की, पहाड़ों पर पेश की, सबने इसको उठाने से इन्कार कर दिा और इससे डर गए कि हम इसका तहम्मुल नहीं कर सकते लेकिन इन्सान ने इसका

बोझ उठा लिया और तहम्मुल किया।

अमानत के सिलसिले में मुख्तलिफ अक़्वाल हैं। एक कौल यह भी है कि इससे मुराद कुरआन पाक है।

इन्सान के तहम्मुल की वजह

अब इश्काल यह होता है कि इनसान ने कुरआन पाक के बोझ को कैसे उठा लिया जब पहाड़ नहीं उठा सके, आसमान और जमीन नहीं उठा सके, अल्लाह तआला ने इसका जवाब भी दिया है और फरमाया है-

''*व लक़द यस्सरनल कुरआनअ लिज़्ज़करि फहल मिन मुद्दकिर।*''

तर्जुमाः और हकीकत यह है कि हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान बना दिया है। अब क्या कोई है जो नसीहत हासिल करे। (आसान तरजुमा)

अगर अल्लाह तआला आसान न फरमाते तो इनसान भी इसका तहम्मुल नहीं कर सकता था। अल्लाह तआला जब कोई चीज आसान फरमाते हैं तो मुश्किल से मुश्किल चज भी आसान हो जाती है और जब अल्लाह तआला मुश्किल बनाते हैं तो आसान चीज भी मुश्किल हो जाती है। अल्लाह तआला की शान बहुत बड़ी है। वह बहुत कुदरत वाला है, अल्लाह चाहता है तो एक मनी के नापाक कतरे से कितना बेहतरीन इनसान बना देता है। एक जरासे बीज और जरा सी गुठली से पूरा दरख्त निकाल देता है। इसलिए कुरआन पाक तो वाकई ऐसी अजीमुश शान चीज है

कि पहाड़ भी इसका तहम्मुल न कर सकें, आसमान और जमीन भी इसका तहम्मुल न कर सकें लेकिन अल्लाह तआला ने इनसान के लिए आसान फरमा दिया, पढ़े लिखे भी, समझ सकते हैं, बूढ़े और जवान भी समझ सकते हैं और हिफ्ज़ कर सकते हैं जवान भी, बूढ़े भी, मर्द भी और औरत भी।

हिफ़ाजत-ए-कुरआन

और फिर अल्लाह तआला ने कुरआन पाक को नाजिल फरमाने के बाद इसकी हिफाजत का भी इन्तेजाम फरमाया है। पहली उम्मतों पर जो किताबें नाजिल हुईं उनकी हिफाजत की जिम्मेदारी उन्हीं उम्मतों पर रखी गई जिसकी वजह से वह लोग उसको महफूज नहीं रख सकते और नतीजा यह हुआ कि इन किताबों में तहरीफें कर दी गई, तब्दीलियां करदी गईं और आज कोई किताब भी अपनी असली हालत पर मौजूद नहीं है। न तौरेत, न इन्जील मौजूद है, न जबूर। इसी तरह से न सहफ इबराहीम न सहफ मूसा और दूसरे अंबिया अलयहिमुस्सलाम पर जो सहीफे नाजिल हुए उनमें से कोई भी आज अपनी असली हालत पर मौजूद नहीं है लकिन अल्लाह तआला ने इस कुरआन पाक की हिफाजत का वादा खुद फरमाया है-

''इन्ना नहनु नज्जलनज़ ज़िक्रा व इन्ना लहू लहाफिजून।''

तर्जुमाः हमने ही इस ज़िक्र को उतारा है और

हम ही इसके मुहाफिज़ हैं।

सबसे पहले तो हिफ़ाजत का यह इन्तेजाम किया गयाः

जिन्नात व श्यातीन के दखूल पर पाबन्दी

कि जब वही का सिलसिला शुरू हुआ तो उसी वक्त से जिन्नात और श्यातीन पर पाबन्दी लगा दी गयी कि अब आसमान के ऊपर दाखिला बन्द। पहले जिन्नात और श्यातीन आसमानों पर चले जाया करते थे और आसमानों के क़रीब जाकर फरिश्ते जो बातें करते उनको सुन लिया करते थे और काहिन और जादूगरों को कुछ बातें बता दिया करते थे। (हाशिया अलसावीः **2/274**)

जिन्नाती और शैतानी बातों से लोगों का गुमराह होना

फिर वह काहिन लोग इसमें अपनी तरफ से कुछ झूठी बातों मिलाकर आगे को चलता कर देते थे और फिर जब कोई एक बात इन सैंकड़ों बातों में सच्ची हा जाया करती थी तो लोग उनको गैबदाँ जानते थे कि यह गैब का जानने वाला है। पहले यह सिलसिला था लेकिन जब कुरआन पाक के नजूल का सिलसिला शुरू हुआ तो अल्लाह तआला ने आसमानों के ऊपर पहरे बिठा दिये कि अब हमारा कलाम नाजिल हो रहा है और हमें इसकी हिफाजत करनी है कोई जिन्नात और श्यातीन इसमें दखल अन्दाजी

न कर सके या लोगों को यह ख्याल न हो जाए कि जिन्नात और श्यातीन भी आसमानों के ऊपर जाते हैं क्या खबर है कि कोई उन्हीं में से यहाँ लाकर पहुँचाता हो। इसलिए जिन्नात और श्यातीन के ऊपर पहरे लगा दिये गये कि जिन्नात और श्यातीन में से अब कोई आसमानों के ऊपर नहीं पहूँचेगा और यह सख्त इन्तेजाम कर दिया गया कि अगर कोई पहुँचने की कोशिश करता है तो आसमान से कोई सितारा अंगारे की शक्ल में निकल कर उस जिन्न या शैतान के ऊपर लगता है और उसको हिलाक कर देता है ताकि ऊपर अब कोई न जा सके और हमारे काम के अन्दर कोई दखल अन्दाजी न कर सके। (तफसीर उस्मानी 1/736)

जिन्नात का इज्तिमाअ

आसमानों में सख्त इन्तेजाम होने के बाद जिन्नात परेशान हुए। तमाम जिन्नात जमा हुए और आपसक में मशवरे हुए कि यह किया हुआ, यह नई बात क्यों हुई? आसमानों के ऊपर हमारा जाना क्यों बन्द कर दिया गया। बात यह तय हुई ऐसा मालूम होता है कि कोई नई चीज पेश आई है जिसकी वजह से हमारे ऊपर पाबन्दी लगाई गई है। ज़रा चल फिर कर तलाश करो, मश्रिक व मगरिब शुमाल व जुनूब में फैल जाओ और जाकर तलाश करो क्या नई चीज पेश आई है। चुनाँचि जिन्नात की कुछ जमाअतें मश्रिक में गई, कुछ मग्रिब में गईं, कुछ शमाल में गईं, कुछ जुनूब में गईं। कुछ दरयाओं और पहाड़ों में गईं। दुनिया भर

में जिन्नात की अमाअतें फैल गईं। हज़रत नबी अकरम सल्ल० चन्द सहाबा रजि० के साथ एक जंगल में फजिर की नमाज में कुरआन पाक पढ़ रहे थे और आप सल्ल० नमाज पढ़ा रहे थे। हज़रत नबी अकरम सल्ल० इमाम हों और कुरआन शरीफ पढ़ रहे हों तो सुनने वालों को क्या लत्फ़ आता होगा। एक जिन्नात की जमात वहाँ पहुँची और यह कुरआन पाक उन्होनें पहली बार सुना और जब हज़रत नबी अकरम सल्ल० को कुरआन पाक पढ़ने हुए सुना तो फौरन यकीन हो गया कि यही वह चीज है जिसकी वजह से हम पर पाबन्दी लगाई गई है। फौरन अपनी कौम के पास आए और बयान किया।

''कालू या कवमअना इन्ना समिअना कुरआनन अजबंय यहदी इलर्रुशिद फआमन्ना बिही वलन नुश्रिकअ बिरब्बिना अहअदा।''

तर्जुमाः ऐ हमारी कौम! हमने एक कुरआन पाक सुना है जा बहुत अजीब व गरीब है, जो हिदायत की रहनुमाई करता है और सच्ची और सही बातें बताता है। हम तो ईमान ले आए और अब हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे।

चुनान्चे वह सब के सब ईमान ले आए। अल्लाह पाक ने उनका यह वाकिआ कुरआन पाक में नकल फरमाया है। हज़रत नबी अकरम सल्ल० पर वही फरमाई-

''कुल ऊहिया इलय्या''

यह जो सूरह जिन्न है इसके अन्दर यह वाकिआ

बयान किया गया है और उनकी पूरी गुफ्तुगू बयान फरमाई है।

जिन्नात की जमात के बारे में दो कौल हैं-

(१) जिन्नात की जमात सात अफराद पर मुश्तमिल थी।

(२) नौ अफराद पर मुश्तमिल थी।

वख्तुलिफा फी अददिहिम फकीला कानू तिसअतुन, वकीला सबअतुन। (हाशिया अस्सावी अला तफसीरिल जलालैन:4 / 240, अलजामेअ लिअहकामिल कुरआन 10 / 40)

हिफाजत कुरआन का गैबी इन्तेजाम

''ला यातीहिल बातिलु मिनबयनि यदयहि वला मिन ख़लफिही''

तर्जुमाः इस कुरआन पाक में बातिल नहीं आ सकता, न आगे से, न पीछे से, न दाँए से न बाँए से।

इसमें बातिल के आने की गुंजाइश ही नहीं। क्यों?

''तनजीलुम मिन हकीमुन हमीद।''

तर्जुमाः यह तो उतारा हुआ है उस जात का जो हकीम और हमीद है।

इन्सानों से कागज और कलम के जरिये से हिफाजत करने के लिए नहीं कहा गया बल्कि इसको दिलों में महफूज करने का हुक्म दिया गया। अब लोग कुरआन पाक को याद करते हैं और अपने सीनों में महफूज कर लेते हैं। छोटे से छोटे बच्चे कुरआन पाक को अपने सीनों में महफूज कर लेते हैं, कागजों को जलाया जा सकता था, लकड़ियों को जलाया जा सकता था, लोहों को पिघलाया जा सकता था

और इसी तरह की दूसरी चीजों को खत्म किया जा सकाता था।

अंग्रेज की नापाक कोशिश

एक मरतबा अंग्रेज ने आपस में मश्वरा किया कि दीन इस्लाम को किस तरह खत्म किया जाए। तय यह हुआ कि कुरआन पाक के पूरी दूनिया में जितने नुस्खे हैं सबको इकटठा करके जला दिया जाए। जब कुरआन पाक का कोई नुस्खा ही नहीं रहेगा तो आहिस्ता-आहिस्ता यह दीन इस्लाम खत्म हो जाएगा। इस कुरआन पाक की वजह से ही तो यह दीन इस्लाम कायम है और जिन्दा है। चुनान्चे इस स्कीम पर अमल किया गया। दुनिया भर से कुरआन पाक के नुस्खे जमा किये और लाखों की तादाद में जमा करके तमाम नुस्खों को जला दिया गया। इस तहरीक का इल्म हुआ तो एक बच्चे को बुलाया और कहा कि कुरआन शरीफ पढ़ो। इस बच्चे ने कुरआन पाक पढ़ना शुरू किया। दूसरे बच्चे भी बराबर मे बैठ गये। वह बच्चा कुरआन पाक पढ़ रहा है जहाँ भी कोई गलती होती है तो दूसरे बच्चे लुक्मा दे देते हैं। वह कुरआन पाक पढ़ता चला गया। यहाँ तक कि उसने पूरा कुरआन पाक सुना दिया । अंग्रेज से कहा यह कुरआन पाक के नुस्खे तो जला दोगे लेकिन इन दिलों के अन्दर से किस तहर मिटा दो गे। अंग्रेज शरमिन्दा हुआ और अपने इरादे से बाज़ आया कि कुरआन पाक को इस तरह खत्म नहीं किया जा सकता।

हिफाज़त का गैबी इन्तेजाम

यह तो अल्लाह तआला ने इसकी हिफाजत को ऐसा गैबी इन्तेजाम किया है कि एक हुरुफ, एक शोशा, एक जबर, जेर हत्ता कि एक नुक्ते की भी तब्दीली की गुंजाइश नहीं है, कोई बड़े से बड़ा हाकिम भी चाहे कि मैं एक हरफ बदल दूँ तो नहीं बदल सकता। यहाँ तक कि कोई बड़े से बड़ा आलिम बड़े से बड़ा मुफ्ती भी चाहे तो वह भी नहीं बदल सकता। कोई बहुत बड़ा शेखुल हदीस भी अगर कुरआन शरीफ सुनाना शुरु करे और कही जरासी गल्ती कर दे तो चारों तरफ से छोटे से छोटे बच्चे लुक्मा देना शुरू कर देते हैं कि इस तरह नहीं उस तरह है।

जिस तरह हज़रत नबी अकरम सल्ल० पर कुरआन पाक नाजिल हुआ आज भी उसी हालत में मौजूद है।

कुरआन थोड़ा-थोड़ा नाजिल होने की हिकमत

''इन्ना अन्जलनाहु फी लयलतिन मुबारअकतिन''

तर्जुमाः हमने इसको लयलते मुबारका में उतारा।

वह मुबारक रात शब कद्र की होती है जिसमें आसमान के ऊपर फैसले किये जाते हैं और फिर रमजानुल मुबारक में जो लयलतुल कद्र होती है वह लयलतुल कद्र जो हजार महीनों से अफज़ल होती है। इस लयलतुल कद्र के अन्दर अल्लाह तआला ने लोह महफूज से समाअ दुनिया

की तरफ उतारा यानी जो लोह महफूज में महफूज है वहाँ से दुनियवी आसमान की तरफ उतार दिया ताकि वहाँ से अल्लाह के हुक्म से सय्यदना हजरत जिबरील अलयहिस्सलाम थोड़ा-थोड़ा हस्बे जरूरत हज़रत नबी अकरम सल्ल० पर पहुँचाते रहें अगर पूरा कुरआन का एक साथ नजूल होता तो तहम्मुल नहीं हो सकता था। इसलिए थोड़ा-थोड़ा उतारा गया। इस तरह तेईस बरस की मुद्दत में कुरआन पाक का नजूल मुकम्मिल हुआ और सय्यदना जिबरील अलयहिस्सलाम चौबीस हजार मरतबा आसमान से दुनिया में हज़रत नबी अकरम सल्ल० के पास वही लेकर नाजिल हुए।

नजूले कुरआन के वक्त मुशक्कत

और वही नाजिल होते वक्त हज़रत नबी अकरम सल्ल० को सख्त सरदी में पसीना आ जाता और पसीना इस तरह टपकता कि जैसे मौती होते हैं औरचेहरा अनवर सुर्ख हो जाता जब चौबीस हजार मरतबा जिबरील अलयहिस्सलाम वही लेकर आए हैं तो गोया चोबीस हजार मरतबा यह हाल हज़रत नबी अकरम सल्ल० का हुआ और आप सल्ल० ने उम्मत की खातिर और इस कुरआन पाक की खातिर यह तहम्मुल फरमाया।

नजूल कुरआन की हिकमत

और अल्लाह तआला ने यह कुरआन किस गर्ज के

लिए नाजिल फरमाया इसके बारे में इरशाद है-

''*अर रहमानु अल्लमल कुरआन*''

तर्जुमाः वह रहमान ही है जिसने कुरआन की तालीम दी।

अर रहमानः अल्लाह तआला चूँकि रहमान है। रहमान उसको कहते हैं जो अपने पराए दोस्त दुश्मन, फरमाँबरदार और ना फरमान हर किसी पर जो रहम और महरबानी करने वाला हो । अल्लाह तआला चूँकि रहमान है इसलिए उसकी रहमानियत का तकाजा हुआ कि अपने बन्दों हिदायत के वास्ते कोई दस्तूर उतारे। इसलिए अल्लाह तआला ने इस कुरआन पाक को उतारा।

और एक जगह इरशाद फरमायाः

''*या अय्युहन्नासु कद जाअतकुम मव इज़अतुम मिर रब्बिकुम।*''

तर्जुमाः लोगो! तुम्हारे पास एक नसीहत आई है तुम्हारे रब की तरफ से।

''*व शिफाउन लिमा फिसस्सुदूर*''

तर्जुमाः जिसमें दिल की बीमारियों का इलाज है।

कुरआन पाक के शुरू में जिक्र किया गयाः

''*अलिफ लाम मीम ज़ालिकल किताबु लारयबफीह*''

तर्जुमाः यह है वह किताब कामिल और मुकम्मिल जिसके अन्दर कोई शक व शुबा नहीं है।

इसके कलाम इलाही होने में कोई शक व शुबे की

गुजाईश नहीं है। अगर कोई शुबा करता है तो उसके अपने दिमाग का कसूर है वरना तो फी नफसह इसके अन्दर कोई शक व शुबा की गुंजाइश नहीं है।

''*हुदल लिल मुत्तकीन*''

तर्जुमाः जो मुत्तकियों के लिए हिदायत है।

मतलब यह है कि जो तकवा अख्तियार करना चाहते हैं उनके लिए हिदायत है। यह मतलब नहीं कि दूसरे लोगों के लिए हिदायत नहीं है। कुरआन पाक फी नफसिही हिदायत है मगर फाइदा उन लोगों का ही होता है जो फायदा हासिल करना चाहते हैं और वह वहीं हैं जो तकवा हासिल करना चाहते हैं।

नुस्खा-ए-शिफा

मसलन एक नुस्खा है इसके अन्दर शिफा है मरग जो इस से फायदा उठाएगा उसी के लिए तो शिफा है, जो शख्स इस नुस्खा पर अमल ही न करे, उसको इस्तेमाल ही न करे, उसको इस नुस्खे से शिफा नहीं हो सकती और इससे यह नहीं कहा जा सकता कि इस नुस्खे में शिफा नहीं है।

बन्दूक की मिसाल

वरना तो ऐसा ही है जैसे एक शख्स बाजार में गया वहाँ एक शख्स बन्दूक बेच रहा था। बन्दूक का इब्तदाई जमाना था। वह बन्दूक की तारीफ कर रहा था कि यह बन्दूक चोरों से, डाकुओं से हिफाजत करती है, माल की

जान की हिफाजत करती है। उस शख्स ने सोचा कि हगर उसको घर ले जाकर रख लेंगे तो जान की भी हिफाजत, माल की भी हिफाजत और हम तो बे फिक्र हो जाएंगे। चुनाँचि उसको खरीद लिया और जाकर मकान के एक कोने में रख दिया और अब खुले दरवाजे सोना शुरू कर दिया कि अब यह खुद हिफाजत करेगी। अब कोई खतरा नहीं है। इत्तेफाक से एक रोज चोर आ गए। जब चोर आए तो इत्मीनान से यह साहब चारपाई पर लेटे हुए हैं औइ इन्तजार कर रहे हैं कि अब यह बन्दूक खुद ब खुद चलेगी और दुश्मनों को भगाएगी। थोड़ी देर तक तो इन्तजार किया और जब देखा कि यह नहीं चल रही फिर कहना शुरू किया कि तुझे आज की के दिन के वास्ते तो लाया था तू चलती नहीं खड़ी हुई है और जब उसने बार-बार कहा। चोरों ने सोचा कि क्या कोने में कोई चीज रखी हुई जो हमारे वास्ते यह लाया था और ख्लती नहीं। जाकर देखा यह तो बन्दूक रखी हुई है। वह चोर भी खाली हाथ थे। उनके पास भी कोई हथियार नहीं था। उन्होंने उस बन्दूक को उठाया और कारतूस भरा और अब उसी को निशाना बनाया कि जल्दी से बताओ सामान कहां रखा हुआ है। अब वह बेचारा मजबूर हो गया और अपने ही हाथ से सब नकदी और सामान लाकर दे दिया। अब अगर कोई शख्स हे कि कहने वाले ने तो कहा था कि यह बन्दूक जान की, माल की हिफाजत करती है यहाँ तो कुछ नहीं किया बल्कि उल्टा नुकसान करा दिया तो भाई कहने वाले ने तो सही

कहा था लेकिन उसका मतलब यह नहीं है कि लाकर उसको एक कोने में रख दिया और वह सब काम खुद कर लेगी और उसे कुछ करने की जरूरत नहीं। इसी तरह कुरआनपाक शिफा है और हिदायत है और कुरआन पाक से तमाम मसाइल हल होते है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि कुरआन शरीफ को लाकर जुज़दान में रख दिया और बेहतरीन खुश्बू लगा दी और ताक में रख दिया और कहने लगें कि अब हमारे सारे काम खुद ब खूद हो जाएंगे।

कौमों का उरूज व ज़वाल

अल्लाह तआला कुरआन पाक के साथ मुस्लिम कौमों की तरक्की उरूज व जवाल व तनज्जुल को वाबस्ता कर दिया है जो कुरआन पाक के अहकाम के ऊपर अमल करेगा अल्लाह तआला उसको सरबुलन्दी अता फरमाएंगे और जो कुरआन पाक से मुंह मोड़ेगा अल्लाह तआला उसको जलील व रुस्वा कर देंगे मगर यह उसूल तो ईमान वालों के लिए है, चूंकि काफिरों के लिए यह कानून नहीं बल्कि उनके लिए दुनिया में हर तरह की आजादी दी जाती है इसलिए कि उनके लिए सिर्फ यह दुनिया ही है मरने के बाद हमेशा के लिए जहन्नुम का दर्दनाक अजाब है। हज़रत नबी अकरम सल्ल० ने इरशाद फरमायाः

"अन उमरबनिल खत्ताबि काला काला रसूलुल्लाहि सल्ल० इन्नल्लाहा यरफऊ बिहाज़ल किताबि अकवामन व यजऊ बिही आखरीन।" (मिश्कात शरीफः 184)

तर्जुमाः बेशक अल्लाह तआला इस किताब के जरिये बअज कौमों को बुलन्दी अता फरमाते हैं और इसी कुरआन के जरिये से बअज लोगों को अल्लाह तआला ज़लील और पस्त कर देते हैं।

सहाबा-ए-किराम रिजवानुल्लाहि अलयहिम अजमईन की कैसी हालत थी बकरियाँ और ऊँट चराने भी उनको नहीं आते थे लेकिन जब कुरआन पाक पर उन्होंने अमल किया तो वह दुनिया के निगहबान बन गए, बादशाह बन गए और बड़ी से बड़ी सलतनतें उनके सामने झुक गईं। उनके नाम सुनकर बड़े-बड़े बादशाहों के ऊपर कपकपी तारी हो जाती थी और इन्सान तो इन्सान हैवान तक उनकी इताअत करते थे, दरिया और समुद्र उनकी इताअत करते थे और आज हम जो जिल्लत और पस्ती का शिकार है और पूरे आलम में मुसलमान मुश्किलात में मुब्तला हैं, उसकी वजह सिर्फ कुरआन पाक के अहकाम से एराज करना और मुंह मोड़ना है।

वह मुअज़्ज़ज़ थे जहां में आमिले कुरआन होकर
और हम ख्वार हुए तारिके कुरआन होकर

कुरआने पाक से एराज़ का वबाल

एक जगह अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है-

''मन अअरजा अन ज़िकरी फइन्ना लहू मईशतन ज़नका।''

तर्जुमाः जो हमारे इस जिक्र से (यानी कुरआन

पाक से) मुंह मोड़ेगा उसकी जिन्दगी तंग बना दी जायेगी।

आज हमें शिकवा है कि जिन्दगी हमारी तंग क्यों है तो यह तो दुनिया में होगा और

''*वनहशुरुहु यवमल क़ियामति अअ़मा*''

क़यामत में उठाएंगे तो अन्धा करके उठाएंगे। कयामत में अन्धा होकर उठेगा जिसने कुरआन पाक से मुंह मोड़ा है। वह कहेगाः

''*लिमा हशरतानी अअ़मा वकद कुन्तु बसीरा*''

ऐ परवरदिगार! मैं तो दुनिया में बीना था, आंखों वाला था मुझे अन्धा करके क्यों उठाया।

अल्लाह तआला फरमाएंगे-

''*काला कज़ालिका अततका आयातुना फनसीतुहा*''

तेरे पास हमारी आयतें आई थीं और तू उनको भूल गया था, उनसे बतकल्लुफ अन्धा बन गया था।

''*व कज़ालिकल यौमा तुनसा*''

इसलिए आज तुझको भुला दिया गया।

और खुद हज़रत नबी-ए-अकरम सल्ल० भी अल्लाह तआला से इन लोगों की शिकायत फरमाएंगे जिन्होंने कुरआन पाक से मुंह मोड़ा था उस वक्त क्या हाल होगा। हज़रत नबी अकरम सल्ल० की शिफाअत और सिफारिश ही जाहिर है कि हमारे लिए निजात का जरिया है, अगर हज़रत नबी अकरम सल्ल० ही हमारी तरफ से दावेदार बन जाएं तो क्या हाल होगा।

चुनान्चे कुरआन पाक में अल्लाह तआला का इरशाद

है-

''व कालर्रसूलु या रब्बि इन्ना कौमित्त-खज़ू हाजल कुरआना महजूरा।''

तर्जुमाः और रसूलुल्लाह सल्ल० कहेंगे या रब! मेरी कौम इस कुरआन को बिल्कुल छोड़ बैठी थी।

अगरचे यहाँ कौम से काफिर लोग मुराद हैं लेकिन यह मुसलमानों के लिए भी डरने का मकाम है कि अगर मुसलमान होने के बावजूद कुरआन करीम को पस पुश्त डाल दिया जाए तो वह भी कहीं इस संगीन जुमले का मिस्दाक न बन जाएं और हज़रत नबी अकरम सल्ल० शिफाअत के बजाए शिकायत पेश करें।

इसलिए हर किस्म की खैर तफअत व सर बुलन्दी और कामयाबी अल्लाह तआला ने कुरआन पाक के साथ वाबस्ता फरमा दी है।

सबसे अफजल इन्सान

और दुनिया के तमाम इन्सानों के मुकाबले में कुरआन पाक पढ़ने और पढ़ाने वाले हज़रात ही अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे अफजल हैं।

हज़रत नबी-ए-अकरम सल्ल० का इरशाद आली हैः

''अन उस्माना काला काला रसूलुल्लाहि सल्ल0 खयरुकुम मन तअल्लमल कुरआना व अल्लअमहू'' (*मिश्कातः* 183)

तर्जुमाः तुम सबमें बेहतर वह लोग हैं जो

कुरआन पाक के साथ वाबस्ता हैं चाहे वह सीख रहे हों या सिखा रहे हों।

कुरआन से तअल्लुक अल्लाह तआला से तअल्लुक है। कुरआन पाक के साथ वाबस्तगी अल्लाह तआला से मुहब्बत की निशानी है। जो आदमी कुरआन पाक से वाबस्ता है तो समझो कि अल्लाह तआला की मुहब्बत उसके दिल में है, किसी के कलाम से मुहब्बत साहिबे कलाम की मुहब्बत की वजह से होती है। अल्लाह तआला जो हमारा खालिक और मालिक है क्या उसकी मुहब्बत का तकाजा यह नहीं है कि हम उसके कलाम को बार बार पढ़ें और उसे समझने की कोशिश करें।

तिलावते कुरआन की फजीलत

कुरआन पाक की तिलावत ही कितनी बाअसे फजीलत है एक हरफ पढ़ते हैं तो दस नेकियां मिलती हैं। हदीस शरीफ में आया है कि कुरआन पाक को नमाज़ में पढ़ना खारिज नमाज से अफजल है। खारिज नमाज कुरआन शरीफ को पढ़ना तसबीह से अफजल है। तसबीह सदके से अफजल है, सदका रोजे से अफजल और रोजा इनसान के लिए ढाल है। (मिशकात शरीफः 188)

जब रोज़ा ढाल है इन्सान के लिए तो फिर तसबीह का क्या हाल होगा फिर उसके मुकाबले में कुरआन पाक पढ़ने का क्या हाल होगा और जो कुरआन पाक को नमाज में पढ़ते हैं उनका क्या हाल होगा। इसलिए कितने मुबारक

हैं वह हजरात जो कुरआन पाक के पढ़ने-पढ़ाने में मश्गूल हैं।

कुरआन से खाली सीना

इसीलिए हदीस शरीफ में आता है-

''*व अनिब्बि अब्बासिन काला काला रसूलुल्लाहि सल्ल0 अनिल्लजी लैसा फी जौफिही शयउम मिनल कुरआनि कलबैतिल खरब।*''

''कि जिसके सीने में कुरआन पा नहीं वह वीरान घर की तरह है।'' इसलिए कौशिश करें कि कुरआन पाक को कुछ न कुछ रोजाना पढ़ेंगे और जो हजरात पढ़े हुए नहीं हैं वह पढ़ने की कौशिश करेंगे कुछ न कुछ तो कुरआन पाक सीने में होना ही चाहिए ताकि यह सीना रोशन हो जाए। कुरआन पाक की एक सतर एक हरफ भी कितनी नूरानी है इसका अन्दाजा नहीं लगा सकते।

कुल हुवल्लाहु अहद और बाज सूरतों की फज़ीलत

''*कुल हुवल्लाहु अहद*'' एक छोटी सी सूरत है।

''*कुल हुवल्लाहु अहद*'' को एक मरतबा पढ़ो तो एक तिहाई कुरआन पाक का सवाब मिलता है।

तीन मरतबा पढ़े तो पूरे कुरआन पाक का सवाब।

दस मरतबा ''*कुल हुवल्लाहु अहद*'' को पढ़ लिया तो जन्नत में एक सोने का महल तैयार हो जाता है।

अगर सोने के वक्त में कोई आदमी सौ मरतबा ''*क़ुल हुवल्लाहु अहद*'' को पढ़ता है तो कयामत में अल्लाह तआला इससे फरमा देंगे- ऐ मेरे बन्दे! तू दाईं तरफ से जन्नत में चला जा।

और दो सौ मरतबा कोई आदमी ''*क़ुल हुवल्लाहु अहद*'' पढ़ता है तो पचास बरस के गुनाह मआफ हो जाते हैं।

और ''*क़ुल या अय्युहल काफिरून*'' को एक बार पढ़ने से एक चौथाई कुरआन पाक का सवाब मिलता है।

सूरह ''*जिलज़ाल*'' को एक बार पढ़ने से आधे कुरआन पाक का सवाब मिलता है।

सुबह के वक्त में कोई ''सूरह यासीन'' को पढ़ता है तो अल्लाह तआला इसके दिन भर के सारे कामों की जिम्मेदारी ले लेते हैं।

कोई शख्स ''सूरह वाकिआ'' को रोजना शाम को पढ़ता है तो उसको फाका नहीं होता और उसके रिज़्क में बरकत होती है।

कोई शख्स सोने से पहले ''*अलिफ़ लाममीम*'' और सूरह ''*मुल्क*'' पढ़ता है उसको अज़ाब कब्र नहीं होता और उस रात में अगर इन्तक़ाल हो जाये तो उसको शहादत का दर्जा मिलता है।

कोई शख्स जुमे के दिन ''सूरह कहफ़'' पढ़ता है वह हर किस्म के फितनों से महफूज रहता है यहाँ तक कि दज्जाल के फितने से भी महफूज रहेगा।

कोई शख्स सुबह के वक्त ''सूरह हश्र'' की अखीर की तीन आयतें पढ़ता है तो उसके लिए जन्नत में एक बाग तजवीज़ कर दिया जाता है और सत्तर हजार फरिश्ते मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो शाम तक उसके लिए मग़फिरत की दुआ करते हैं। यही फ़जीलत शाम के वक्त पढ़ने की है। लेकिन अफसोस है कि इतना बड़ा खजाना हमारे घर में महफूज और मौजूद है और फिर भी परेशान हैं। कितनी बड़ी महरूमी की बात है।

शेखुल हदीस हज़रत मौलाना मौ० ज़करिया मुहाजिर मदनी रह० का इस मौजू पर "फजाइले कुरआन" बहुत अहम रिसाला है जिसका मुतालआ बहुत जरूरी है। फजाइले कुरआन से ही चन्द अहादीस मुलखसन नकल करता हूँ।

तिलावते कुरआन की मिसाल

(1) तिलावत करने वाले मौमिन और मुनाफिक और तिलावत न करने वाले की मिसाल हदीस शरीफ में बयान की गयी है-

''अन अबी मूसा काला काला २सूलुल्लाहि सल्ल० मसलुल मुअमिनिल्लजी यक२उल कु२आना मिसलुल तुरंजि रीहहा तय्यिबुन वतआमुहा तय्यिबुन व मसलुल लजी ला यक२उल कु२आना मिसलुन तम२ति लारीहा लहा व तअमुहा हुलवुन व मसलुल मुनाफिकिल लजी ला यक२उल कु२आना कमसलिल हनजलति लयसा लहा रीहुन व तअमुहा मु२रुन व मसलुल

मुनाफिकिल लज़ी यकरउल कुरआना मिसलुर रयहानता रीहुहा तय्यिबुन व तअमुहा मुररून। (रवाहुल बुखारी व मुस्लिम वन्निसाई व इब्ने माजा)

तर्जुमाः हज़रत अबू मूसा रजि० ने हुजूर अकरम सल्ल० का यह इरशाद नकल किया है कि जो मुसलमान कुरआन शरीफ पढ़ता है, उसकी मिसाल तरंज की सी है कि उसकी खुश्बू भी उम्दा होती है और मजा भी लजीज और जो मोमिन कुरआन शरीफ न पढ़े उसकी मिसाल खुजूर की सी है कि खुश्बू कुछ नहीं मगर मजा शीरीन होता है और जो मुनाफिक कुरआन शरीफ नहीं पढ़ता उसकी मिसाल हनजल के फल की सी है कि मजा कड़वा और खुश्बू कुछ नहीं और जो मुनाफिक कुरआन शरीफ पढ़ता है उसकी मिसाल खुश्बूदार फूल की सी है कि खुश्बू उम्दा और मजा कड़वा।

मकसूद इस हदीस से गैर महसूस शै को महसूस के साथ तश्बीह देना है ताकि जहन में फर्क कलाम पाक के पढ़ने और न पढ़ने में सहूलत से आ जावे वरना जाहिर है कि कलाम पाक की हलावत व महक से क्या निस्बत, तरंज व खजूर को अगरचे इन अश्या के साथ तश्बीह में खास नुकात भी हैं जो उलूम नबविया से तअल्लुक रखते हैं और हजरत नबी करीम सल्ल० की उलूम की वुसअत की तरफ मुशीर हैं। मसलन तरंज ही को ले लीजिए मुँह में खुश्बू पैदा करता है, मैदे को साफ करता है, हज़म में कुव्वत देता है वगैरह-वगैरह। यह मुनाफें ऐसे हैं कि किरअत कुरआन

शरीफ के साथ खास मुनासिबत रखते हैं। मसलन मुँह का खुश्बूदार होना, बातिल का साफ करना, रूहानियत में कुव्वत पैदा करना, यह मुनाफे तिलावत में हैं जो पहले मुनाफे के साथ बहुत ही मुशाबहत रखते हैं। एक खास असर तरंज में यह भी बतलाया जाता है कि जिस घर में तरंह हो वहां जिन नहीं जा सकता। अगर यह सही है तो फिर कलाम पाक के साथ खास मुशाबहत है। तरंज से हाफिज़ा भी कवी होता है और हजरत अली करमुल्लाह वजहू से अहया में नकल किया है कि तीन चीजें हाफिजे को बढ़ाती हैं-

(1) मिसवाक
(2) रोज़ा
(3) तिलावत कलामुल्लाह शरीफ

कुरआन शरीफ कयामत में झगड़ेगा

(2) *अन अब्दि र्रहमानबनि औफ़िन अनिन नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लमा काला सलासुन तहतल अरशि यौमल कियामति अलकुरआनु यहाजुल इबादा लहू जहरन व बतनुन वल अमानतु वर्रहमु तुनादी इल्ला मन वस्सलनी वस्सलहुल्लाहु व मन कतअनी कतअहुल्लाहु। (रवाहु फी शरहिस्सुन्नति)*

तर्जुमाः अब्दुल रहमान बिन औफ रजि० हुजूर

अकदस सल्ल० से नकल करते हैं कि तीन चीजें कयामत के दिन अर्श के नीचे होंगी। एक कलाम पाक कि झगड़ेगा बन्दों के लिए। कुरआन पाक के लिए जाहिर है और बातिन दूसरी चीज अमानत है और तीसरी रिश्तेदारी जो पुकारेगी कि जिस शख्स ने मुझको जोड़ा अल्लाह उसको अपनी रहमत से मिला दे और जिसने मुझको तोड़ा अल्लाह अपनी रहमत से उसको जुदा करदे।

इन चीजों के अर्श के नीचे होने से मकसूद उनका कमाल कर्ब है यानी हक सुबहानहू व तकद्दुस के आली दरबार में बहुत ही करीब होंगी। कलामुल्लाह शरीफ के झगड़ने का मतलब यह है कि जिन लोगों ने उसकी रिआयत की, उसका हक अदा किया, उस पर अमल किया उनकी तरफ से दरबारे सुबहानहू में झगड़ेगा और शिफाअत करेगा, उनके दरजे बुलन्द कराएगा।

करामत का ताज

(३) मुल्ला अली कारी रह० ने बरवायत तिरमिजी नकल किया है कि कुरआन शरीफ बारगाह इलाही में अर्ज करेगा कि उसको जोड़ा मरहमत फरमाएं तो हक तआला शानहू करामत का ताज मरहमत फरमा देंगे, फिर वह ज्यादती की दरख्वास्त करेगा तो हक तआला शानहू इकराम का पूरा जोड़ा मरहमत फरमा देंगे, फिर वह दरख्वास्त करेगा कि या अल्लाह उस शख्स से राजी हो जाएं तो हक सुबहानहू व

तकददुस उससे रजा का इजहार फरमा देंगे और जबकि दुनिया में महबूब की रजा से बढ़कर कोई भी बड़ी से बड़ी नियमत नहीं होती तो आखिरत में महबूत की रजा का मुकाबला कौनसी नियमत कर सकती है और जिन लोगों ने उसकी हक तलफी की है उनसे अपने बारे में मुतालबा कि मेरी क्या रिआयत की, मेरा क्या हक अदा किया, शरह अहया में इमाम साहब रह० से नकल किया है कि साल में दो मरतबा खुत्म कुरआन करना कुरआन शरीफ का हक है। अब वह हजरात जो कभी भूल कर भी तिलावत नहीं करते जरा गौर फरमालें कि इस कवी मुकाबिल के सामने क्या जवाब दही करेंगे, मौत बहरे हाल आने वाली चीज है इससे किसी तरह मफर नहीं।

हर हरफ पर दस नेकी

(4) *अन इब्नि मसऊदिन २जि० काला काला २सूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम मन क२आ हरफन मिन किताबिल्लाहि फलहू बिही हसनतुन वलहसनतु बिअशरि अमसालिहा ला अकूलु अलिफ लाम मीम ह२फुन अलिफुन हरफुन व लामुन हरफुन मीमुन हरफुन। (२वाहुत तिर्मिजी वकाला हाजा हदीसुन सहीहुन गरीबु इसनादन वददारिमिय्यु)*

तर्जुमाः हजरत इब्ने मसऊद रजि० ने हुजूर अकदस सल्ल० का यह इरशाद नकल किया है कि जो शख्स एक हरफ किताबुल्लाह का पढ़े उसके लिए इस हरफ के इवज में एक नेकी है और एक नेकी का अज्र दस नेकी के बराबर मिलता है। मैं यह नहीं कहता कि सारा "अलिफ लाम मीम" एक हरफ है बल्कि अलिफ एक हरफ, लाम एक हरफ और मीम एम हरफ है।

मकसूद यह है कि जैसे और आमाल में पूरा अमल एक शुमार किया जाता है कलाम पाक में ऐसे नहीं बल्कि अजज़ा अमल भी पूरे अमल शुमार किये जाते हैं और इसलिए तिलावत कलाम पाक में हर हरफ के बदले एक एक नेकी दी जाती है और हर नेकी पर हक तआला शानहू की तरफ से ''*मन जाअअ बिलहसनति फलहू अशरअ अमसालिहा*'' (जो शख्स एक नेकी लावे उसको दस नेकी के बकदर अजर मिलता है) दस हिस्से अज्र का वादा है और अकल दरजा है।

''*वल्लाहु युजाइफु लिमंय यशाउ*''

(हक तआला शानहू जिसके लिए चाहते हैं अजर ज्यादा फरमा देते हैं।)

हर हरफ को मुस्तकिल नेकी शुमार करने की मिसाल हुजूर अकदस सल्ल० ने इरशाद फरमादी कि "अलिफ लाम मीम" पूरा हरफ शुमार नहीं होगा, बल्कि अलिफ लाम मीम अलाहिदा हरफ शुमार किए जाएंगे और इस तरह पर "अलिफ लाम मीम" के मजमूए पर तीस नेकियां हो गईं।

हाफिज़ के वालिदैन को ताज पहनाया जाएगा

(5) *अन मुआज़िनिल जुहनीय्यि रजि० काला काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लमा मन करअल कुरआन व अमला बिमा फीहि उलबिसा वालिदाहु ताजन यौमल कियामति जवउहु अहसना मिन जवइस्शमसि फी बुयूतिद दुनिया लव कानत फमा जन्नुकुम बिल्लजी अमला बिहाज़ा।* (*रवाहु अहमद, व अबूदाऊदा, व सह्हहहूल हाकिमु*)

तर्जुमाः हजरत मुआज़ जुहनी रजि० ने हुजूरे अकरम सल्ल० का यह इरशाद नकल किया है कि जो शख्स कुरआन पढ़े और उस पर अमल करे उसके वालिदैन को कयामत के दिन एक ताज पहनाया जाएगा जिसकी रोशनी आफताब की रोशनी से भी ज्यादा होगी, अगर वह आफताब तुम्हारे घरों में हो, पस क्या गुमान है तुम्हारा इस शख्स के मुतअकल्लक जो खुद आमिल है।

यानी कुरआन पाक के पढ़ने और उस पर अमल करने की बरकत यह है कि उसके पढ़ने वाले के वालिदैन को ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिसकी रोशनी आफताब की रोशनी से बहुत ज्यादा हो, अगर वह आफताब तुम्हारे घरों में हो।

हाफिज़ को ताज पहनाया जाएगा

(6) हाकिम रह० ने बरीरह रजि० से हुजूर अकरम सल्ल० का इरशाद नकल किया है कि जो शख्स कुरआन शरीफ़ पढ़ और उस पर अमल करे उसको एक ताज पहनाया जावेगा जो नूर से बना हुआ होगा और उसके वालिदैन को ऐसे दो जोड़े पहनाए जाएंगे कि तमाम दुनिया उनका मुकाबला नहीं कर सकती, वह अर्ज करेंगे कि या अल्लाह! यह जोड़े किस सिले में हैं तो इरशाद होगा कि तुम्हारे बच्चे के कुरआन शरीफ पढ़ने के इवज़ में।

कुरआन पाक को नाज़रा और हिफ्ज़ करने की फजीलत

(7) जमाउल-फवाइद में तिबरानी से नकल किया है कि हज़रत अनस रजि० ने हुजूर-ए-अकरम सल्ल० का यह इरशाद नकल किया है कि जो शख्स अपने बेटे को नाज़िरा कुरआन शरीफ़ सिखलाए उसके सब अगल और पिछले गुनाह मआफ हो जाते हैं, जो शख्स हिफ्ज़ कराए उसको कयामत में चौदहवीं रात के चाँद के मुशाबह उठाया जाएगा, उसके बेटे से कहा जाएगा कि पढ़ना शुरू कर जब बेटा एक आयत पढ़ेगा बाप का एक दरजा बुलन्द किया

जाएगा हत्ता कि इसी तरह तमाम कुरआन शरीफ पूरा हो।

कुरआन पढ़ने वाले का ऐजाज़ क़यामत में

(8) *अनिब्बि उमरा रज़ि० काला काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमा सलासतुन ला यहूलुहुमुल फज़उ वला यनालुहुमुल हिसाबु हुम अला कसैबिम मिम मिसकिन हत्ता यफरुगा मिन हिसाबिल खलाइकि. रजुलुन करअल कुरआना इब्तिगाआ वजहिल्लाहि व अम्मुन बिही क़वमन वहुम बिही राजूना व दाइन यदऊ इलस सलाति इब्तिगाआ वजहिल्लाहि व रजुलुन अहसना फीमा बयनिही व बयना रब्बिही व फीमा बयनिहू व बयना मवालीहि। (रवाहुत तिबरानी, फिल मुआजमिस्सलासति)*

तर्जुमाः इब्ने उमर रज़ि० हुजूर अकदस सल्ल० का इरशाद नकल करते हैं कि तीन आदमी ऐसे हैं जिनको कयामत का खौफ़ दामनगीर न होगा, न उनको हिसाब किताब देना पड़ेगा। इतने मखलूक अपने हिसाब किताब से फारिग हो वह मुश्क के टीलों पर तफरीह करेंगे। एक वह शख्स जिसने अल्लाह के वास्ते कुरआन शरीफ़ पढ़ा और इमामत की इस तरह कि मुक्तदी उससे राज़ी रहे, दूसरा

वह शख्स जो लोगों को नमाज के लिए बुलाता हो, सिर्फ अल्लाह के वास्ते, तीसरा वह शख्स जो अपने मालिक से भी अच्छा मआमलजा रखे और अपने मातहतों से भी।

क़यामत की सख्ती उसकी दहशत उसको खौफ़ उसकी मुसीबतें और तकालीफ ऐसी नहीं कि किसी मुसलमान का दिन उससे खाली हो या बे खबर हो। उस दिन में किसी बात की वजह से बेफिक्री नसीब हो जाए यह भी लाखों निअमतों से बढ़कर और करोड़ों राहतों से मुगतनम है, फिर उसके साथ अगर तफरीह व तनअउम भी नसीब हो जाए तो खुशनसीब।

कुरआन पाक की शफाअत मकबूल है

(9) *अन जाबिरिन अनिन नबिय्यि सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमा अलक़ुरआनु शाफिउन मुशफ्फिउन व माहिल्लुन मुसद्दिक़ुन मन जअलाहू अमामहू क़ादहू इलल जन्नति व मन जअलाहू खल्फा जहरिही साक़ितुन इलन्नारि। (रवाहु इब्ने हबान वलहाकिमु मतव्वलन व सह्हहहु)*

तर्जुमाः हज़रत जाबिर रजि० ने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से नकल किया है कि कुरआन पाक ऐसा शफी है जिसकी शिफाअत कुबूल की गई और ऐसा झगड़ालू है कि जिसका झगड़ा तसलीम कर लिया गया जो शख्स उसको अपने आगे रखे उसको यह जन्नत की तरफ़ खींचता है और जो उसको पसे पुश्त डाल दे उसको

जहन्नुम में गिरा देता है।

यानी जिसकी शफाअत करता है उसकी शफाअत हक तआला शानहू के यहां मकबूल है और जिसके बारे में झगड़ा करता है कि अपनी रिआयत रखने वालों के लिये दरजात के बढ़ाने में अल्लाह के दरबार में झगड़ा करता है और अपनी हक तलफी करने वालों से मुतालबा करता है कि मेरा हक क्यों नहीं अदा किया जो शख्स उसको अपने आगे करले यानी इसका इत्तेबा और उसकी पैरवी अपना दस्तूरूल अमल बना ले उसको जन्नत में पहुंचा देता है और जो उसको पुश्त के पीछे डाल दे यानी इसका इत्तबा न करे उसका जहन्नुम में गिरना जाहिर है।

कुरआन शरीफ से बढ़कर किसी की सिफारिश नहीं

(10) *अन सईदिब्नि सुलैमिन मुरसलन काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमा मा मिन शफीइन अफज़लु मनजिलतुन इन्दल्लाहि यौमल कियामति मिनल कुरआनि ला नबिय्युन वला मलकुन वला गयरहु (कालल इराकीय्यु रवाहु अब्दुलाहुल मालिकिब्नि हबीबिन कज़ा फी शरहिल अहया)*

तर्जुमाः हज़रत सईद रजि० हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम का इरशाद नकल करते हैं कि

कयामत के दिनल अल्लाह के नजदीक कलाम पाक से बढ़कर कोई सिफारिश करने वाला न होगा, न कोई नबी न फरिश्ता वगैरह।

कुरआन शरीफ के जरिये अल्लाह का कुर्ब

(11) कुरआन शरीफ से बढ़कर और किसी चीज से अल्लाह तआलाल का कुर्ब हासिल नहीं होता।

अन अबी ज़र्रिन रजि० काला काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमअ इन्नकुम ला तुरजिऊना इलल्लाहि बिशयइन अफजलु मिम्मा खरजा मिन्हु यानियल कुरआना। (रवाहु अलहाकिम व सह्हहहु अबू दाऊदु फी मरासीलिही)

तर्जुमाः हजरत रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम अल्लाह तआला की तरफ रुजूअ और तकर्रुब इस चीज से बढ़कर किसी और चीज से हासिल नहीं कर सकते जो खुद हक सुबहानहू तआला से निकला है यानी कलाम पाक।

इमाम अहमद इब्ने हंबल का ख्वाब

इमाम अहमद इब्ने हन्बल ने ख्वाब में अल्लाह तआला की ज़ियारत की तो अल्लाह तआला से दरयाफ्त किया कि सबसे बेहतर चीज जिससे आपका तकर्रुब हासिल

हो वह क्या चीज है? इरशाद हुआ कुरआन पाक। अर्ज किया समझकर या बिला समझे। इरशाद हुआ समझकर या बिला समझे।

अहलुल करुआन अहलुल्लाह हैं

(12) *अन अनसिन रज़ियल्लाहु तआला अनहु काला काला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमा इन्ना लिल्लाहि अहलीना मिनन नासि कालू मिनहुम या रसूलल्लाहि काला अहलुल कुरआनि हुम अलहुल्लाहि व खास्सतुहू (रवाहुन नसाई वब्नु माजता वलहाकिमु व अहमदु)*

तर्जुमाः हज़रत अनस रजि० ने हुजूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम का इरशाद पाक नकल फरमाया है कि हक तआला शानहू के लिए लोगों में से कुछ लोग खास घर के लोग हैं। सहाबा रिजवानल्लाहु अलयहिम अजमईन ने अर्ज किया कि वह कौन लोग हैं? इरशाद फरमाया कि कुरआन शरीफ वाले कि वह अल्लाह के अहल है और ख्वास। क्या मर मिटने की चीज है कि अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ वालों को अपने खास और इन्तहाई मुकर्रब फरमाया है।

कलामुल्लाह शरीफ का शफी और इस दरजे का शफी होना जिसकी शफाअत मकबूल है और भी मुतअद्दद रिवायात से मालूम हो चुका।

कुरआन शरीफ का हसीन व जमील आना

(१३) लाइला मसनूअ (नाम किताब 12) में बज़्ज़ार की रिवायत से नकल किया है और वज़अ का हुक्म भी इस पर नहीं लगाया कि जब आदमी मरता है तो तो उसके घर के लोग तजहीज़ व तकफीन में मशगूल होते हैं और उसके सिरहाने निहायत हसील व जमील सूरत में एक शख्स होता है जब कफन दिया जाता है तो वह श्ख्स कफन और सीने के दरमियान होता है, जब दफन करने के बाद लोग लौटते हैं और मुनकर नकीर आते हैं, तो वह इस शख्स को अलैहदा करना चाहते है कि सवाल यकसूई में करें, मगर यह कहता है कि यह मेरा साथी है, मेरा दोस्त है मैं किसी हाल में इसको तनहा नहीं छोड़ सकता। तुम सवालात के गर मामूर हो तो अपना काम करो। मैं उस वक्त तक इससे जुदा नहीं हो सकता कि जन्नत में दाखिल कराऊं। इसके बाद वह अपने सीथी की तरफ मुतवज्जा होकर कहता है कि में ही वह कुरआन हूं जिसको तू कभी बुलन्द आवाज से पढ़ता था और कभी आहिस्ता, तू बेफिक्र रह। मुनकर नकीर के सवालात के बाद तुझे कोई गम नहीं है। इसके बाद जब वह अपने सवालात से

फारिग हो जाते हैं तो यह मला अअला से बिस्तर वगैरह का इन्तेजाम कराता है जो रेशम का होता है और उसके दरमियान मुश्क भरा होता है।

हक तआला अपने फज़्ल व करम से हम सबको यह दोलत नसीब फरमाए। आमीन!

मुहतरम हजरात! हम अपने हालात पर गौर करें। आज हमारा क्या हाल है। कुरआन पाक से बेरगबती हद से ज्यादा बढ़ी हुई है। आज हमको कुरआन पाक की तिलावत की तौफीक नहीं होता, न उस पर अमर करने की फिक्र है। हमें यह भी ख्याल नहीं आता कि कुरआन पाक का हमसे क्या मुतालबा है? कुरआन शरीफ क्या चाहता है ? कभी तरजुमा सुनने की भी तौफीक नहीं होती। अपनी इस हालत से तोबा करना चाहिए। आज हम इस मजलिस में अहद करें किः

(1) इन्शाअल्लाह हम कुरआन पाक की तिलावत का अहतमाम करेंगे।
(2) अपने घरवालों को भी इसकी तरगीब देंगे।
(3) अपने बच्चों को इन्शाअल्लाह हाफिज बनाएंगे।
(4) स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की दीनी तालीम का इन्तेजाम करेंगे।
(5) अपने सब काम खास तौर पर शादी ब्याह सुन्नत के मुताबिक करेंगे।
(6) शादी में रसूम व बिदआत और हर तरह की खुराफात से अहतराज करेंगे।

(7) सूदी लेन-देन से अहतराज करेंगे।
(8) हर किस्म के इख्तलाफ़ात व नजाआत से बाज आएंगे।
(9) सौ फीसद नमाज़ी बनाने की कौशिश करेंगे।
(10) अपने सब काम सुन्नत के मुताबिक करने की कौशिश करेंगे, इन्शाअल्लाह।

दुआ फरमाएं कि अल्लाह तआला कुबूल फरमाए और इन सब बातों पर अमल की तौफीक अता फरमाए। आमीन!

ततिम्महः कलाम पाक के इन सब फज़ाइल और खूबियों के जिक्र करने से मकसूद इसके साथ मुहब्बत पैदा करना है। इसलिए कि कलामुल्लाह शरीफ की मुहब्बत हक तआला शानहू की मुहब्बत के लिए लाजिम व मलजूम है और एक की मुहब्बत दूसरे की मुहब्बत का सबब होती है। दुनिया में आदमी की खिलकत सिर्फ अल्लाह जिल शानहू की मअरफत के लिए होती है और आदमी के अलावा सब चीज की खिलकत आदमी के लिए होती है।

व आखिरु दअवाना अनिल हम्दुल्लिाहि रब्बिल आलमीन।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾